134 B
565
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 565

891.431
P887M

॥ मोसीम वहार ॥

॥ श्रीः गणेशायनमः ॥

संग्रह करता वो प्रकाशक राजचन्दर प्रसाद सरैया गंज
मुजफ्फरपुर।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 565
Date 14-12-71
GOVT. OF INDIA

होली।

होली खेलत गांधी वीर, भारत मण्डल में ॥ टेक ॥
बुधि का रङ्ग साहस पिचकारी उन्नति झोरी अबीर ॥ १ ॥
रङ्ग अबीर भरी पिचकारी छिड़कत गांधी गम्भीर ॥ २ ॥
गावत राग स्वराज वसन्ती बाजत डफ मजीर ॥ ३ ॥
पहली होली मची चम्पारण जहां निलवर की भीर ॥ ४ ॥
कुम कुम मारि मारि गातन पर हरत सकल भय पीर ॥ ५ ॥
कहे "देवनन्दन" धन गांधी हैं पर हित अरपे शरीर ॥ ६ ॥

दौगर।

जागो २ स्वदेशी भाई विपत्ति चहु दिशि घेरि आई ॥ टेक ॥
सोवत भारत दीन दशा में, तन की सुधि बिसराई ॥
गांधी डफ बजाए जगावत उठ बैठो सब भाई,
करो अपनी प्रभुताई १ ॥
सत्य की रङ्ग धरम पिचकारी उन्नति अबिर बनाई।
खेलहु फाग त्याग कुमति को गर चाहत कुशलाई,
तजो आपस की लड़ाई ॥ २ ॥
तेरो दुःख सुनि गांधी आये यत्न करत बहुताई।
उन्नति को झाल बजावहु झिलमिल शंसय भ्रम मिटाई,
सभी तुम्हरो है भलाई ॥ ३ ॥
गावहु गीत स्वराज्य परम हित जो भारत सुखदाई।
मांगहु सत्य स्वराज्य प्रभु से तन मन प्रेम लगाई, ।
हरषि "देवनन्दन" गाई ॥ ४ ॥

होली।

भारत बीच गांधी खेलत होरी ॥ टेक ॥
कोई सखी आरती मङ्गल गावे ॥ १ ॥
कोइ सखी चौर डुलावेरी ॥२॥ भारत०
कोइ सखी झोरी में रङ्ग घोरी लावे ॥३॥
कोइ सखी मारे पीचकारी ॥४॥ भारत०
चरखा काटो काटा कपड़ा बुने हो ॥५॥
पेन्हत सारी भारत नारी ॥६॥ भारत०

॥ पिअकड़ा ॥

आंखके अन्धे गांठ के पूरे समझे हैं सरकार भारत भरमे बहुत
गरम हैं मधुआकी बजार। रे पिअड़ा धिक्कार रे पिअड़ा फिटकार रे
पिअकरा ढोल बजउले नचले गउले वो कइले तेंहार, गांठ
गिरहसे पइसा खोइले औ बनले गवाँर। रे पिअकरा।
दरूआ पिले बकले झकले औ कइले गोहार, बहनी बेटिया के
झकटउले मैंया के धिक्कार। रे पिअकड़ा।
करज लेले दरूआ पिले औ पिले उधार महाजनसे टोक धरउले
भेल जुतन के मार। रे पिअकड़ा।
टूखड़ा कर २ पइसा जोड़ले से लेलकउ कलवार ओकरा भगिआसे
अगोया लगलई ले गेलइ सरकार॥ रे पिअकड़ा॥
कपड़ा बेचले गहना बेचले औ बेचले घरबार, गली २ में भिखिया
मङ्गले अबका बेचबे छाड़। रे पिअकड़ा॥
लांग लङ्गोटा हाथमें सोंटा हउफुटल कपार, केकरो झोटा केकरो
झोटी हउ फुटल कपार। रे पिअकड़ा॥
कुल है हिन्दू कौम के अन्दर पीने वाले खासे बन्दर, दरूआ में
सब कुछ है सुन्दर पीयन चमार। रे पिअकड़ा॥
कुआ कुलमे हिन्दू भाई नौआ धोबी और कसाई, सब कोई
पीकर जात गमाई मनवा कर विचार। रे पिअकड़ा
मदवा पिले लठिया खइले औ खइले तलवार, सुकवा खइले
जुतवा खइले कइसन तोहर संस्कार॥ रे पिअकड़ा
हाकिम गउआ पइसा लेले गली २ में मारी देलन, पइसक बदला
मारखिलौलन हाय हमर सरकार। रे पिअकड़ा॥
भलो बेरादर, गांधी दर २ देते हैं पूकार चेतो जागो मेरे सहोदर
तोड़ो २ खुमार॥ रे पिअकड़ा॥
कहना मानो जागो उठो सच को नाहो मानो झूठो नीन्द को
तोड़ो उठके बैठो कहता हुं हरबार। रे पिअकड़ा
देस छोड़ बरदेस के बस में मरे हुये हरकसनाकस मे फुट न करु

तू अब आपस में देशवा है समहार ॥ रे पियकड़ा ॥
समझो बुझो बनो ज्ञानी रखलो अपना पत और पानी बहुत
सुनी तुम राम कहानी है जावो हो० । रे पियकड़ा
मानो भाई बात हमारी मदवा पीयो होय भीखारी छोड़ो २
दारु तारी पिने वाले कौधिक्कार ॥ रे पियकड़ा ।

दादरा ।

टेक ॥ मत लइयों चुदरिया हमार विदेशी होवालमा । हैं हकु
गांधी का अब चरखा मगाइये । कपड़ा बनानेकेलिये करघाभोलाइये
करो देशोपै तनमन निसार ॥टेक॥ दौलत गइ सब गेर मूवानिक
की हमारी बाकी रहि है अब इसकेभी जाने की तैयारी । फिर
रोओगे धुनि धुनि कपार ॥ टे ॥ कुडते फतुही मिरजइ देशी
बनाइये मलों को फिलट कैप न हरगिज पहिना इसी बचे रोजाना
सत्तर हजार ॥ टेक ॥ जेवर मेरा करदीजिये गांधी के हवाले
जिससे बच जोर हिन्द की इज्जत को बचाले । इन्द्र बम्मा की है
पुकार । मत लइयों चुदरिया हमार ॥

राष्ट्रिय चैत ।

कैसी भइले तोरी गतीया हो भारत कुमती तजे से
धन जन बल विद्या चली गइले लुटी गइले सारी सम्पतीया
हे भारत कुमती तजे से । सरवस खोइ बने पर आसोरील क्यों न
फटत तोरी छतीया । हे भारत । टेक । तेतीस कोटी सनतान जीयत
मे सहती है घोर बीपतीया । हे भारथ । जहां कुमती तहां विपत
घनेरी तुलसी लिखत नीज पतीया ॥ हे भारथ चीतरंजन गांधी
सौकत की मानहु अबहु विनितीया है । भारथ । धरनी को तोडे
नाही कमी है करो देहु बंगवा के खेतीया । हे भारथ । चरखा से
सुत काटी काटी कर करघा से बीनु निज धोतीया । हे भारत ।
पंचायत से न्याये चुकावमल करु खरच से फतीया ॥ हे भारत
भांग चरस दारु तारी से छोरहु अपनी पीरितीया । हे भारथ ।
विद्या से देशो मे पढ़ो पढी त्यागहू अपनी अनितीया ॥ हे भारथ ॥

देवन्दन की बिनती यही है छोरहु अपनी अनीतिया। हे भारथ।

देश सुधार गजल।

था तुझे खनजर लगाना, क्यों न पहिले कहदिया
मर गीया हम मर मिटु, तुने इए शासत कर दिया
अब याद आता है मुझे, पंजाब का वह दुर दशा
रोकर पकड़ सर मय रहु, इज्जत हमारा लेलिया
छोटे छोटे बच्चो मेरे, थे वहि पंजाप में
सीर पर खंजर लगा, तुने रकत को दरीया कीया
कोइ समय ऐसा नही, तुने इअह सुभको कह सकी
हां जिस घरी संकट पराथा, मैं जान धन सब दे दिया
को हटा सकता मेरा दुःख, तूं समझ और बुझ लो
गांधी ने बीरा उठा, औतार प्रभु का ले लिया
गांधी प्रभु अरजो सुनो, कहता राजेन्द्र इश तुझे
देके दुखको बोझ सुझको, इय परेसां कर दिया

दादर।

सुत काटेगें चरखे चलाय जायगी॥ सारे इरोप के दौलतो लौलाय जायगें। जो हमे अब रोलानेको तैयार हैं एकदीन छोगा के वहभी रोलाय जायगें खाक में हमे क्या मीलायगा कोइ। खाक में उसीको मीलाय जायगें। देशका गाढ़ा खद्दर पहीन कर हम। सब बीदेशी का शासन जलाय जायगें। अहले लण्डन को जाकर सुनादे कोई अब जोलाहे बना कर बोलाय जायगें। शोख कर काम धोवी का तैयार हो मैले कपरे भी उनसे धुलाय जायगें। कौसी दरजी से सीखि वो बखीय गोरी कुरते पैजामें अंगी सीलाय जायगी। कोट पतलुन वो चेसटर के सब उनके हीन्द वालो के दील से भुलाय जायगें। कालों कि ऐसी हुकुमतको अब हो गोरे तरपेगें वो दिल बीलाय जायगें। बोलो भरतको जे हो स्वदेशी बनो हकतुमारें तुम्हें सब दीलाय जायगें। अब मसीअा का आवाज ये देखना आरे भारत के मुरदे जीलाय जायगें।

कवित ।

अररररर सुनले भइया मोर कबिर भलेजी भले गांधीजी जब जेल में गइले कह गइले समझायि चरखा चलावो सुत को काटो पहोरो खधर भाए भलानि पहिरो खधर भाए

होली ।

विदेसीआ की देखो ढीटाइ हो वरवस रार मचाई मांगन है स्वराज्य स्वत नीज हमे कहत बलवाइ नेयायि को अन्याय बतावत हमे नीत्य धमकाइ, येअछा रङ्ग लगाइ ॥ १ ॥ विदे०

वोजैय ध्वजा फहरायि दोयि तुम जरमन मार भगाइ, फल इस्को पंजाब में पायि, अम्रितसरमे आइ पेट के बल से चलाइ ॥ २ ॥

फौजी नीयम कीयि जारी जब लाहोर शाहो मचाइ, बेत चलायि नेतावो पर है ये करत ढीटाइ नजानत पीर पराइ ॥ ३ ॥

असन चलायि नाअसन्न परजापर तोप दीयो बरसाइ, कोरामार नगन नारीन को अत्याचार मचाइ, लाज तनीक नही आई ॥ ४ ॥

तोरेवो बंधन भाइ मुसलीम का मक्का पर दखल जमाइ, गला घोंट इसलाम धर्म्म को झुटी देत सफाइ, नयाय की नाव डुबाइ ॥ ५ ॥

सहनसके अत्याचारो को गांधी शौकत भाइ असहजोग को मंत्र फुको के देस को दियो है जगाइ, तत्राग दरसावह्न भाइ ॥ ६ ॥

मुसलमान हीन्दू सब मीलके पारसि सीख इसाइ, असहजोग का रंग चडावो सेसन कोइ उपाइ, ये बरा है दुखदाइ भेद भाव बिलगावो परसपर पंचाइत बैठाइ चरखा चक्र चलायसुदरसन काटो सूत सफाइ करो अब आप बिनाइ ॥ ८ ॥

शान्त रहो मोलि कामकरो तुम जदपोहो कठीनाइ सूर्य्य स्वराज्य उदेय होगा अब गांधि कि फेरीदोहाइ, समये पहुचो नीयराइ ॥ ९ ॥ (देवनन्दन प्रसाद कांटो कुसी)

होली ।

"भारत विच गान्धो खेलें होरो"

असहयोग पिचकारी लेकर,

भारत शान्ति अबिर और । भारत ॥ १ ॥

सकुचि हिन्द कमल बिकसित भई,

दिन कर उदय से नभ फोरी। भारत ॥ २ ॥

धर्म धवजा शौकत फहरावत,

अचल न्याय की ले डोरी। भारत ॥ ३ ॥

बाजत डफ मृदंग चहुँ दिशी,

जय हो जय गांधी तोरी। भारत ॥ ४ ॥

आन्ति "लक्ष्मण" रहहु हिन्दजन,

द्वेष कपट चित से छोरी। भारत ॥ ५ ॥

चैत।

उठ, उठ, हिन्द सजन मां, हो रामा, भोर भईअब।
ईश भजन कर आलस्य को दूर करु मानु मानु गांधी के वचनमां हो रामा। भोर भई अब ॥ १ ॥ गर चाहत कल्याण आपनो, तब निज खोलहु नयनमां होरामा। भोर भइ अब ॥ २ ॥ छाड़ गूलामी करहु तिजारत, खेतिया के करहु यतनमां होरामा। भोर भइ अब ॥ ३ ॥ वंगा उपजाओ, चरखा चलावो, धारहु स्वदेशो, चलनमां होरामा। भोर भइ अब, ॥ ४ ॥ राजीब नयना, भलाइ चहत गर, हो हिन्द को करहु रटनमां होरामा। भोर भई अब ॥ ५ ॥

गजल।

अब तो जीना है बेकार हमको बिना लिये स्वराज ॥

किजिय मालिक मदद हमारो, नइया है मझधार।

चोर उचक्का घाट घाट है कैसे उतरु पार। अब तो०।

लीडर नेता चुन २ के सब हो गये गिरफ्तार।

मजहब भी अब जाने को है कब तक सोच विचार। अब०।

फतवा को भी जब्त किया है ये भारत सरकार।

मजहब पर भी चलना अब तो हो गया दुश्वार। अब०।

हाल सुना पञ्जाब का होगा डायर अत्याचार।

बच्चों तक पर गोली चला कर भून दिया था भाड। अब०।
कैसा कैसा जुल्म किया है कह कर के इन्साफ।
अमृतसर में जाकर देखो नजर है आता साफ॥ अब०॥
कहा समरना है एराक अब कहां गया बेगदाद।
जालिम ने सब छीन लिया है और किया बरबाद। अब०॥
शौख, सय्यद को क्या कहें हम हो गए सब बेजान।
अगली बातें रहीं नहीं अब रौकसत सुद इमान॥ अब०॥
छत्री में कुछ सत्या नहीं बाभन बने गवार।
पंडित सब तो बने भिखारी दर दर करें पुकार॥ अब०॥
किस किस का मैं रोना रोऊं किस किस का लु मैं नाम।
खान बहादुर लाला हो गये डायेर के गुलाम॥ अब०॥
गांधी, अजमल, अली बेरादर मोलाना आजाद।
नेहरु किचलु लालाजी सब करते है फरियाद॥ अब०॥
भारत वासी क्या करें अब दीन बन्धु भगवान।
व्याधा नित नया फांस लगावें और करे हैरान॥ अब०॥
तुमही नाथ अनाथन के हो बस है तेरी आस।
तेरे होते चोर उचक्का गले में डाले फांस॥ अब॥
बहु डुबतों का है बचायो नइया करदो पार।
मेरो बेरी इतनी देरी ये मेरे करतार॥ अब०॥
भारत वासी तुम्हें पुकारे जोड़े दोनों हाथ।
दुःख से व्याकुल हो गए अब दुःख हरो यदुनाथ अब०॥
हम ही भर्ति फौज में होकर ऐ मेरे करतार।
जर्मन को हम मार भगाया सात समुन्दर पार॥ अब०॥
मार भगा कर आय वहां से खुब मुबारक बाद।
बदला इसका मिला है लेकिन जेल करो आबाद। अब०
हमही डिपटी और कलेकटर हमही थानेदार।
भाइ हमारा ठोकर खाये और कोरे कि मार॥ अब०॥
हम ही गाड़ी रेल चलावें हम ही पहरेदार।

हमहि रैलमें धक्का खायें और हीटे की मार ॥ अब० ॥
हमही से सब सेठ बने है मालिक और जमींदार ।
हमहि को सब आंख बनाए और करैं तकरार ॥ अब० ॥
गेहूं चावल हम उपजायें खायें साहब लोग ।
भीनी घर में भूने गए सब लोग लगावें भोग ॥ अब० ॥
कल तो बनिया बन कर आए और आज बने महराज ।
हम ही सब को लडो भिड़ा कर खुब किया है राज । अब० ॥
तीन रुपए की नालिस हो तो खर्चा साढ़े चार ।
हाइकोर्ट तक लड़ते २ हो गए बरबाद ॥ अब ॥
तीन रुपए की डिगरी हुई ? खर्चा हुआ साफ ।
तीन बर्ष हैरान भी होनायही है इन्साफ ॥ अब० ॥
बरके घर धनतो मरते मरते हो गए बरबाद ।
मुर्दा दोजख जनत जाय तुम हुए अबाद ॥ अब० ॥
मतलब की सब बतें हुई कब हुआ उपकार ।
हमको तो अब याद नहीं है जब से है अधिकार । अब० ।
बनिया बनकर आए साहब खुब किया व्योपार ।
गांठ के पूरे ग्राहक मिल गए चल गया रोजगार ॥ अब० ॥
भारतवासी दुःखी बने हैं दुःखसे हैं बे हाल ।
चोर उचक्का लुट रहाहै साले साल अकाल ॥ अब० ॥
दो रुपये सेर घी बिकवाया चावल साढ़े चार ।
गेहूं का तो नाम नहीं है भेज दयिा उस पार ॥ अब० ॥
अपनी खेर इसी में समझो छोड़ो पर की आस ।
अपनी रक्षा अपने करलो बर्ना होगे नास ॥ अब० ॥
देशी पहनो देशी ओढ़ो देशी करो रेवाज ।
जिस दिन ऐसा हो गया उस दिन है स्वराज्य ॥ अब० ॥
घर घर चर्खा जारी कर दो सूत करो तैयार ।
दुःख मुसीबत जायगी सब साल समुन्दर पार ॥ अब० ॥
लिखते हैं अखबार में अपने गांधी जी महराज ।
चर्खा करगहा चला चला कर ले लेंगे स्वराज्य ॥

तोप के गोले कुछ नहीं है बिल कुल है बेकार ।

सूत के गोले बरस रहे है सात समुन्दर पार ॥

थोड़े दिन को कसर रही है सुन लीजिये सरकार ।

सूत के गोले तोड़ेंगे अब लन्दन की दीवार ॥

मोटिया खद्दर पहिन के हम हो कर के आजाद ।

मनचेस्टर को लंका सायर कर देंगें बर बाद ॥

रहमत उल्लाह क्या कहे अब कहना है बेकार ॥

न्याय के आगे सर झुकावो ऐ मेरे सरकार ॥ अब० ॥

(मारवाड़ी भाषा)

विन्दौ लागो अब तो आया, कइयां पार पड़ेगा आय ।

पार पड़ेगो अब, कइयां पार पड़ेगो आय विन्दो० ॥ टेक ॥

पहिले, वो मैं चर्खे फिर्यां धर्म कर्म को रगड़ो मेल्यो ।

घर में रुपयों खुब रमियां, कांई न कुछ परवाय । विन्दौ ॥

गांधी ने हेला मचवायो । देशी खद्दर को बिकवायो ।

हाणे । विदेशी को छुड़वायो नफ़ो दियो घटवाय ॥ विन्दौ ॥

कांग्रेसवाला झट से आयो । धरनो देकर परण करायो ।

धर्म ईश्वर साखी रखवायो दसखत लियो कराय विन्दौ ॥

थोड़े दिन तो चुपका चाल्या । खोटा दिन थोरजात्यै टाल्या ।

फिर बनियांकी चाल निकाल्या प्रन को दियो भुलाय ॥ वि० ॥

विलायती को धुम मचादो । देशी की मंडि उठवादो ॥

धर्म ईश्वरको धाका मिटादो ढोल पोल दिखलाय । वि० ।

विक्री से रुपयो जो आयो ॥ गौरक्षनी को नाम धरायो ॥

खर्च धर्म खाते लिख लायो, सगलो दियो उड़ाय ॥ वि० ॥

इन तो "पूरी पुण्य" करायो, । टट्टी ओट शिकार छिपायो ।

पण, यह अबतो वेरो आयो, प्रायश्चित को धाय ॥ विन्दौ ॥

विलायती ने दाम गिरायो । जीतो बाजी हार करायो ।

फस्यो गलो थो, और फसयो दाम । करु के हाय ॥ वि० ॥

"पूंजी गयी दिवालो" आइ । बिकरी होयो एक न पाइ ।

अबतो सैन दिखे भाइ; निकल दिवालो जाय ॥

विन्दो लागो अबतो आया, कइयां पार पड़ेगा आया ॥ विन्दो ॥

॥ बेदुमनमा ॥

हाल सुनु हाल सुनु भारत के वासी भइया
बड़ा दुःख देइ अब हाए रे बेदुमनमा।
केतना के लिहु लेइ अस अपरेसन से
देखु मोट उजरे बनावे रे बेदुमनमा।
केतना के बाबा ... मसन तामील करे
चुपे चुपे डिगरी करावे रे बेदुमनमा॥
केतना गरीब के जमीनवा नालीस करे
इखल देहानी तु करावे रे बेदुमनमा॥
खदुआ के गला काटि बनके महाजनतु
देदा गुना सुद लिहु लिहु रे बेदुमनमा।
बाल बच्चा वाला होके दया वों धरम नाहीं
इज्जत और धन के मिटाए रे बेदुमनमा॥
अपने भइअवा भतीजवा से लडी लडी
दाव दाव अपना जमावें रे बेदुमनमा।
अपने मे लरी कोरी ... गवाह हाय
घरवा के तीन तेरह करे रे बेदुमनमा॥
अपने गीतीअवा देअदवा से लर लर
दीन अरु दुनिया भुलाय रे बेदुमनमा॥
दुसरी के दुख देई आपने पतित होए
गीहुमामे घुनमा पिसाय रे बेदुमनमा।
घर घर से मांडक लरइया तु लर लर
धन वो धरम दोनो खोए रे बेदुमनमा।
बरा रे कठिन से जे मनवा खरीद होए
कउडिया के मोल मे विकाए रे बेदुमनमा।
तनी तनी बात लागी सबहि तु कोरी भर
केतना रूपइया गवांए रे बेदुमनमा।
केतनो के भुट ... सुठ हरीको भरको देई

अपन गुलमवा बनावे रे बेद्रमनमा ।

कितना के थीप आप सान दान कर कर
एके दकि धसना गिरावे रे बेद्रमनमा ।

कितना के माल जाल जपती कराइ लेले
कितना के छीनधि जमीन रे बेद्रमनमा ॥

जाइ कचहरिया मे करे घोड़ दौरिया तु
लाज बीज अंखिया के खोइरे बेद्रमनमा ।

छोर कचहरीया के नौत दौल आम जाल
छोर दे अधरम के काम रे बेद्रमनमा ।

छोर दे वकिलवाके छोर दे तइदवाके
छोर दे मोकदमा कराइ रे बेद्रमनमा ॥

छोर बेद्रमनीया तु भारतके लाज रख
मामा माइवन तुही जज रे बेद्रमनमा ।

तोहर जुलुम देख भारत के छाती काटे
काइसन कपुत पुत भेले रे बेद्रमनमा ।

भारत के पुत सब अईसन कपुत भेल
भारत के नाक कान काटे रे बेद्रमनमा ।

दुर कर जात पात भाइ भाई बन सब
मले मले मिल सब कोई रे बेद्रमनमना ।

किना वी कपट छल कुदर के दुर करदे
भारत के बन अब दास रे बेद्रमनमा ।

एक मत होइ सब भारत के जे बी
भारत बेहाल अब भेल रे बेद्रमनमा ।

एक मत दोनो भाई जब तक न होई राम
तब तक न मिलत सवराज रे बेद्रमनमा ।

रहमत होइ होई करजोर कहई सी
हृदय विचार सुन भईआ रे बेद्रमनमा ।

सोच सोच कहली के ठकुर सोहाती बात
हमरा न तनीको सोहाय रे बेद्रमनमा ॥

The Behar Standard Press Muzaffarpur.